



डॉ. विजय मिश्र

हार्वर्ड विश्वविद्यालय के प्रतिष्ठित भौतिक विज्ञानी एवं संस्कृत विद्वान। कवि के तौर पर न्यू इंग्लैंड, दक्षिण एशिया के अनेक देशों में चर्चित एवं सफल यात्राएँ कीं। अनेक गरिमापूर्ण कवि सम्मेलनों में भागीदारी। विगत 18 बरसों से हार्वर्ड विश्वविद्यालय में सालाना भारतीय कविता पाठ का आयोजन कर रहे हैं।

सम्पर्क : 180, बेडफोर्ड रोड, Lincoln, MA, USA ईमेल : misra.bijoy@gmail.com

व्याख्या

वाल्मीकि रामायण : आधुनिक विमर्श-41

लंकायुद्ध, सीता का उद्धार-6

हिंदी अनुवाद : मनीष श्रीवास्तव

रामायण की कथा केंद्र सीता है। उनके अज्ञात माता-पिता द्वारा उनका परित्याग, उनके दत्तक पिता जनक द्वारा उनका कठिन स्वयंवर, अपने पति के साथ निर्वासन में महल का परित्याग, अपने पति सेवा करते समय उनका अपहरण, और जो अब एक अनजाने देश में अकेले एक अभिमानी, व्यभिचारी राक्षस के चंगुल में फंसी हुई थी। वह एक महिला है जिसे बच निकलने की पूरी आशा है!

महिलाएं प्रकृति का प्रतिबिम्ब होती हैं। इन्हें प्रकृति की अपराजेयता से जोड़ कर भी देखा जा सकता है। एक महिला को शायद यह पता नहीं होता कि वह कहाँ गलत है, उसके पास स्वयं के लिए बहुत कम समय होता है। काल के चक्र का केंद्र महिलाएं होती हैं। रामायण की कथा केंद्र सीता है। उनके अज्ञात माता-पिता द्वारा उनका परित्याग, उनके दत्तक पिता जनक द्वारा उनका कठिन स्वयंवर, अपने पति के साथ निर्वासन में महल का परित्याग, अपने पति सेवा करते समय उनका अपहरण, और जो अब एक अनजाने देश में अकेले एक अभिमानी, व्यभिचारी राक्षस के चंगुल में फंसी हुई थी। वह एक महिला है जिसे बच निकलने की पूरी आशा है! यह कहानी काल्पनिक हो सकती है, किन्तु इसकी प्रकृति में वास्तविकता की महक है।

राम अपनी वानर सेना के साथ लंका के बाहरी छोर पर स्थित सुवेला पर्वत पर पहुंच गए। संध्या का समय था, नगर बहुत ही सुन्दर दिख रहा था। अगली सुबह उन्होंने सुंदर उद्यानों और वर्षा वनों का पता लगाया। पूरी लंका नगरी अपने विशाल महलों और सुन्दर मार्गों से दमक रही थी। राम को अपने महल में आराम करते हुए रावण की एक झलक मिली। वे लंका की भव्यता को बनाए रखने में रावण के कौशल और शैली के बारे में सोचने लगे। सुग्रीव रावण को देखते ही अपना आपा खो बैठे। उन्होंने उस पर छलांग लगा दी। एक भयानक मल्ल युद्ध हुआ। सुग्रीव ने युद्ध में रावण को थका दिया और हर्षोल्लास के साथ अपने खेमे में वापस लौट आए। किन्तु राम ने उन्हें चेताया -

"शासक इस तरह के दुःसाहसी कार्य नहीं करते!" राम युद्ध में वानरों को संभालना सीख रहे थे।

तभी विभीषण आकर अपने गुप्तचरों द्वारा प्राप्त रावण की युद्ध योजनाओं की सूचना दिये हैं। "नगर में चार द्वार हैं। पूर्वी द्वार सेनानायक प्रहस्ता द्वारा संरक्षित है। महापर्व और महोदरा दक्षिणी द्वार की रखवाली करते हैं। रावण का पराक्रमी पुत्र इंद्रजीत पश्चिमी द्वार पर विराजित है। रावण



स्वयं उत्तरी द्वार की रखवाली करता है। नगर का केंद्र एक अत्यंत कुशल सेना के साथ विरूपकृष्ण द्वारा संचालित है। दस हजार हाथी, दस हजार रथ, बीस हजार घोड़े और दस लाख पैदल सेना के सैनिक हैं। मैं ये आपको भयभीत करने की मंशा से नहीं अपितु, युद्ध की योजना बनाने में आपकी सहायता करने के लिए कह रहा हूँ।"

राम ने आज्ञा दी, "फुर्तीले नील को पूर्वी द्वार पर प्रहस्त का सामना करने के लिए भेजना चाहिए, अंगद को दक्षिणी द्वार की देखभाल करनी चाहिए, हनुमान को पश्चिमी द्वार पर इंद्रजीत को संभालना चाहिए। मैं स्वयं लक्ष्मण के साथ उत्तरी द्वार पर रावण से युद्ध करूँगा। सुग्रीव और जाम्बवन को सेना का केंद्र संभालना होगा।"

राम ने पर्वत पर चढ़कर पुनः सेना का विस्तार देखा। राम का लक्ष्य सीता को बचाना था, न कि किसी को मारना या संपत्ति नष्ट करना। वे जानते थे कि वानरों और रीछों की बड़े पैमाने पर घुसपैठ से लंका का वैभव बुरी तरह प्रभावित होगा। उत्तरी द्वार पर पहुँचने के बाद उन्होंने अंगद को रावण को संदेश भिजवाने का आदेश दिया। "तुमने ऋषि-मुनियों और देवताओं के विरुद्ध बड़ा अपराध किया है। तुमने गंधर्वों, नाग और यक्षों के कुलों को आघात पहुँचाया है। मैं तुम्हें पुनर्विचार करने का एक और अवसर देता हूँ कि सीता को तुरंत वापस लौटा दो अन्यथा तुम्हें अपने सभी सहयोगियों के साथ मृत्यु का सामना करना होगा।"

अंगद ने ठीक वैसे ही सारा संदेश पहुँचा दिया। रावण क्रोधित हो गया। "मार डालो इसे!" उसने आदेश दिया। चार रक्षकों ने अंगद को पकड़ तो लिया, किन्तु वह फिसल कर निकल गया। वह चारों ओर कूदते फांदते, वस्तुओं को चकनाचूर करते, महल के शीर्ष पर पहुँच गया और पताका तोड़ डाली। अंत में, वह अपनी सेना में वापस लौट आया। वह चिल्ला चिल्लाकर अपने नाम का उद्घोष कर रहा था। नगर को चारों ओर से असंख्य वानरों से घिरा देख रावण ने अपने सैनिकों को युद्ध के लिए तैयार होने के लिए बुलाया। शंखों की भारी गर्जनाएं गूँज उठीं। हाथियों और घोड़ों पर सैनिक तैयार थे। सहस्र भालों की चमक ने अंतरिक्ष तक को प्रकाश से भर दिया। वानर पेड़-पत्थरों को शस्त्रों की तरह इस्तेमाल करते थे। राक्षसों ने गर्जना की "लंकाधिपति रावण की जय हो, वानरों ने 'वानर राज सुग्रीव की जय' का नारा लगाया! भयानक युद्ध छिड़ चुका था।

युद्ध के दौरान, अंगद दक्षिणी द्वार पर इंद्रजीत के पीछे

इंद्रजीत ने वरदान का राम और लक्ष्मण पर प्रयोग करते हुए और उन्हें नागपाश से बाँध दिया। वे दोनों रक्त से लथपथ हो पृथ्वी पर गिर पड़े। इंद्रजीत अपनी मायावी शक्तियों का प्रयोग करके अदृश्य था। वह चिल्लाया "मैंने दोनों को यम के पास भेज दिया है!"।

चला गया। इंद्रजीत क्रोध से भर उठा। उसे ब्रह्मा से एक वरदान मिला था जिससे वह किसी को भी सर्पनुमा तीरों से मारकर बेहोश करने की शक्ति का आह्वान करने में सक्षम था। इंद्रजीत ने वरदान का राम और लक्ष्मण पर प्रयोग करते हुए और उन्हें नागपाश से बाँध दिया। वे दोनों रक्त से लथपथ हो पृथ्वी पर गिर पड़े। इंद्रजीत अपनी मायावी शक्तियों का प्रयोग करके अदृश्य था। वह चिल्लाया "मैंने दोनों को यम के पास भेज दिया है!"। यह सब देखकर वानर सेना का मनोबल गिर गया। केवल विभीषण ही अपनी शक्तियों के माध्यम से इंद्रजीत को देख पा रहे थे। वे जानते थे कि राम और लक्ष्मण जीवित हैं!

दोनों भाइयों को पृथ्वी पर बेसुध पड़ा देख इंद्रजीत महल में वापस लौट आया। वह फूला नहीं समा रहा था : "जिन दो भाइयों ने खर और दूषण को मारा था, वे अभी धूल चाट रहे हैं! उन्हें कोई भी इस बंधन से छुड़ा नहीं सकता। जो मेरे पिता को तनाव दे रहे थे, उनको मैंने शांत कर दिया है! हर्षोल्लास से सराबोर वह वानर सेनापतियों के पीछे हो लिया, नील, मेंडा, द्विविंदा, जम्बावन, हनुमान, गवाक्ष पर प्रहार करते हुए अंत में अंगद तक पहुँचा। सुग्रीव पूरी तरह निराश हो चुके थे। किन्तु विभीषण को अभी भी आशा थी। वह जादुई शक्तियों को जानते थे। उन्होंने कहा, "यह दुखी होने का समय नहीं है। कृपया मंत्र शक्ति समाप्त होने तक राम और लक्ष्मण की रक्षा करें। कृपया सभी को सलाह दें कि भ्रामित समाचार न फैलाएं!"

इंद्रजीत ने अपने पिता को यह समाचार सुनाया। रावण बहुत प्रसन्न हुआ। वह जानता था कि यह सदैव के लिए

रामायण कथा है प्रकृति के तत्वों द्वारा समय पर सहायता मिलने की! जटायु ने पंचवटी में रावण से युद्ध किया, सम्पाती ने सुग्रीव को लंका का मार्ग दिखाया और अब महान गरुड़ पक्षी सामने था। उन्होंने लक्ष्मण के शरीर को नागपाश से बाहर निकालने में सहायता की। राम ने गरुण के प्रति आभार व्यक्त किया।

नहीं है, किन्तु यह एक उपयुक्त क्षण था जब सीता दोनों भाइयों को पृथ्वी पर पड़ा देख उन्हें मृत मान सकती थी। रावण ने इंद्रजीत को विदा कर दिया। उसने सीता की देखरेख कर रही राक्षसी त्रिजटा से बात की। "सीता को कहो कि राम और लक्ष्मण का वध मेरे पुत्र इंद्रजीत ने कर दिया है। उसे पुष्पक पर बिठा कर ले जाओ और पृथ्वी पर पड़े शव दिखाओ।" हमेशा की तरह, रावण मन ही मन प्रसन्न हुआ। "सीता सारे साजो श्रृंगार के साथ स्वयं अपनी इच्छा से मुझसे मिलने के लिए तैयार हो सकती है!"

सीता यह सुनते ही भारी शोक में डूब गयीं। त्रिजटा उन्हें पुष्पक में सवार करके चल पड़ी। सीता ने लंका में प्रसन्नता देखी, युद्ध के मैदान में उन्होंने दोनों राजकुमारों को बाणों की शैल्या पर लेटे देखा। उनके शरीर तीरों से छिदे हुए थे, उनके कवच बिखर गए थे और धनुष अलग हो गए थे। सीता ने उन्हें मृत मान लिया, वह टूट गई। वह जोर-जोर से विलाप करने लगीं। "जिन लोगों ने मुझसे कहा कि मैं मातृ सुख भोगूंगी, एक रानी और एक सौभाग्यवती अर्धांगिनी बनूंगी - वे सभी झूठे थे। मेरे पति राम अब नहीं रहे!" सीता ने अपनी शारीरिक विशेषताओं का वर्णन करते हुए बताया कि लोगों ने उन्हें क्यों कहा था कि उसे रानी बनने का मान मिलेगा। "वे सभी झूठे हैं!" वह चीख पड़ी।

त्रिजटा ने सीता को सांत्वना दी : "हे पवित्र नारी, निराश मत हो! तुम्हारे पति संभवतः अभी भी जीवित हैं। वानर सेना नायक रहित दिखाई नहीं देती है। किसी भी विधवा स्त्री को इस पुष्पक विमान पर सवारी करने की

अनुमति नहीं है। रावण भी इस सत्य को जानता है। मैं यह भी देख सकती हूँ कि वानर दोनों भाइयों की रखवाली कर रहे हैं, उनके शरीर स्वच्छ एवं निर्मल प्रतीत होते हैं। मुझे पूरा विश्वास है कि वे मरे नहीं हैं!" "ऐसा हो सकता है!" सीता ने राहत की सांस ली। वह अशोक वाटिका में वापस लौट आयीं। वह परेशान थीं, गहन चिंता में थीं और वाटिका में ऊँचे वृक्षों को एकटक घूरे जा रही थीं। वह संभवतः अपने आत्मविश्वास को माप रही थीं!

राम तो मूर्छा से जाग गए, लेकिन लक्ष्मण नहीं उठे। दर्द और तनाव का सामना करना एक व्यक्तिगत विशेषता है। लक्ष्मण गहरे घावों के साथ पृथ्वी पर लेटे हुए थे। उसके अंगों से रक्त बह रहा था और चेहरा लाल हो गया था। राम व्याकुल हो उठे। "क्या ये ठीक होगा कि मैं सीता को तो प्राप्त कर लूँ और अपने प्यारे भाई को खो दूँ? सीता जैसा तो कोई मिल सकता है किन्तु मैं कठिन खोज भी करूँ, तो लक्ष्मण जैसा भाई कभी नहीं मिल सकता! हे लक्ष्मण, मुझे तुम्हारी याद आती है। तुमने मेरी निराशा के समय मुझे सांत्वना दी, और अब मैं तुमसे बात भी नहीं कर सकता! मैं वापस जाकर तुम्हारी माता को क्या कहूँगा? मैं अपनी माँ से क्या कहूँगा? मुझे भी तुम्हारे साथ मरना होगा!" राम ने मान लिया लक्ष्मण की मृत्यु हो चुकी है। वह स्वयं पर आरोप लगाते रहे। "हे सुग्रीव, तुम्हारे वीर सैनिकों ने बहुत कुछ किया है। उनमें से प्रत्येक अपने आप में पराक्रमी है। किन्तु अब आपको तुरंत इस स्थान से वापस लौट जाना चाहिए। मैं असफल रहा। विभीषण को सिंहासन पर नहीं बैठाया जा सका। स्वयं की रक्षा करो! जहाँ मेरा भाई चला गया मैं भी वहीं जाता हूँ!"

राम का कुल श्येनों के परिवार का मित्र था। रामायण कथा है प्रकृति के तत्वों द्वारा समय पर सहायता मिलने की! जटायु ने पंचवटी में रावण से युद्ध किया, सम्पाती ने सुग्रीव को लंका का मार्ग दिखाया और अब महान गरुड़ पक्षी सामने था। उन्होंने लक्ष्मण के शरीर को नागपाश से बाहर निकालने में सहायता की। राम ने गरुड़ के प्रति आभार व्यक्त किया। "मैं गरुड़ हूँ, आपकी श्वासों ने मेरा आह्वाहन किया और मैं आपके स्नेह से बाहर आया हूँ! राक्षसों द्वारा युद्ध में प्रयोग किया जाने वाले ये जादुई नागपाश सबसे दुर्जेय हैं।" गरुड़ ने आगे कहा, "अब आप स्वतंत्र हैं, आपको अब रावण के संहार और सीता को वापस लाने के लिए आगे बढ़ना चाहिए!"

"आप नियत समय में मुझे जान लेंगे!" गरुड़ उसी तरह आसमान की ओर उड़ चला जैसे आया था। ■